काव्यसंग्रह ॥

जिसमें

इसप्रकार के कवित्त व सवैयादि अति
मनोहर सरलतासे वर्णित हैं।

जिसको

उत्तर प्रदेशान्तर्गत बदरीनाथ निवासी
शिवराम [illegible] शुक्लने प्रोप्राइटर सेठ टीका-
रामजी की आज्ञानुसार अतिपरिश्रम
से सर्व सज्जनों के चित्त विनोदार्थ
संग्रह किया।

उसको
प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजी ने निज "ज्ञानसागर प्रेस"
बाराबंकी में छपवाकर प्रकाशित किया।

[illegible] सन् १९१५ ई.

श्रीगणेशायनमः ॥

काव्यसंग्रह

एकरदन गजबदनसों विनयकरहुं करजोरि ।
हैं प्रसन्न मोहिं अधमको दीजै बुद्धि अथोरि ॥
अम्बा जगजाहिरहुदी तव पद पद्म मनाय ।
रचन चहत या ग्रन्थको कीजै आनिसहाय ॥
नहिं विद्या नहिं चतुरई नहिं कविताको ज्ञान ।
कीजे कविजन शरण में मोहिं तुच्छनादान ॥
विबुध विप्र बुधगुरुचरण बन्दौं बारम्बार ।
भूलचूक जो होइ कछु ताको लेहु सम्हार ॥

कोटि मार्तण्ड चन्द्रमण्डल सुभगकीट कुण्डल ललित अलकावलि सुजै गई । राजत प्रत्यक्ष मुक्ताहल त्रिभंगी । अंग रगन जरीतिपट पीतिपट लैआई । झलक झलाझल- की झांकी सों झपाक चित्त २ ते निकरिके रगन हितैगई । रगन ते दौरि मन मन ते श्याम तन तन ते [illegible] छबिछैगई ॥१॥

आनन्द के कन्द निर्द्वन्द चरणारविन्द
मंगल सकल सुर संकट हरण हैं। सोहैं शंख
चक्र गज अंकुश धनुष धनुमीन पद्म कमल
वसुधाहू के धरण हैं॥ मेरो जान चिंतामणि
हू के सब चिन्तामणि भनत गोपाल अशरण
के शरण हैं। कारणकरण जगतारण तरण
जनगाजन के जहाज ब्रजराज के चरण हैं ॥१॥

लसैं अरुण नखवरण उमंग कामभांति
अभिराम आभा उमगि अनन्द के। सन्त
मन रंजन श्यामगज मंजन सुभग नैन
अंजन हैं अंजन भवफन्द के। काम गर्व
गंजन प्रकाश प्रेम पुंजन प्रसिद्धि सिद्धि कं-
जन विहारी सुखकन्द के। आपदा हरण
सर्वसम्पदाकरण सदा नेम आचरण हैं चरण
रामचन्द्र के॥ २॥

गिरिकोउठाय ब्रजगोपकी रक्षाकरि लियो
अनलते उबार्यो पुनि बालक मँजारी को ॥
गजकी अरज सुनि आइके छुड़ायलीनो सा-
हर्योअतनेकष्ट पांडवकी नारीको॥ रख्यो

गजधंरतरे बालक बिहंगमको राख्योपण
भारतमैं भीषम ब्रह्मचारीको ॥ त्रिविधिताप
हारीनिज संतन सुसुखकारी मोहिंनोभरो-
सोभारी ऐसेगिरिधारीको ॥ ४ ॥ केऊकम
भार्तिक्रिऊ अन्नसौंप्रसादीभये केतनकीमति
भईन्याय सांख्यमतकी ॥ केते जगदानी
यमनेमको प्रमाणकैं केतेपरतीतगहें तीरथ
हूतेतकी ॥ केऊब्रह्मचारी केऊयोगीजटाधारी
भयेज्ञानप्रन्थ केतनको दयासाँच सत्यकी॥
मैंतो हूंपतित मेरीकौन योसकैहैगति कम-
लापतिराखौ पतिमोसे पतितकी ॥ ५ ॥ केऊ
करैंसेवा केऊराखतहैं लेवादेवा केऊकरिसान
ताकेखेतड़ीका हिल्लाहै ॥ केतेकमेनासी
केते दानहूँकेआसीकेतेक गानाविषयकीचि
धि राखिल्लाहै ॥ केतेमहाक्रूरकेतेसद्गुणपूर
केतेधीरकेतेअतिशेकेरणखेतसैंअखिल्लाहै॥
मैंतोमहाक्रूरताको उद्यमनहिंपूरएकयशोम-
तदाराकोरोहमारोउसिल्लाहै॥ ६ ॥ कमला
निवास निजदासनकी पूरेंआश ताकेचिस्ता

सविषभक्ष्योमोगनाईहै ॥ केशनकमलनयन सतनकरन चैन दैनइतिभये अपनेजनको नाईहै ॥ इन्द्रजूकोहर्यो मान सुदामाको दियोदान भक्तजानिछानितामदेवजीकोछोई है। नंदकेकन्हाईनिजसंतनकुसहाईसखदेवजू केभाई सोहमारेसहाईहै ॥ ७ ॥ केऊप्रेमलक्ष णाभक्तिमेंविचक्षणाहैंनीकेभांतिसेवाकरजा नैनिधिज्ञानकी॥केऊतत्वबोधसंतिआतमको शोधकरैं साधैनित्य योगगतिजानेंराभपान की ॥ केऊलनुसाधना सभालना यतनसहैकेऊ केऊपासना गणेशशिव भानकी ॥ होंतोहूं अज्ञान ताकीकाहूमे पिछाननाहीं कोऊकछु जानेंतौ जानूंनाथज्ञानकी ॥ ८ ॥ काहूके अधारसेवा वणिजव्योपारको काहूकेअधार शिनवित्तखेतगांवको ॥ काहूके अधारतनु सारभ्रातबंधुनको काहूकेआधार प्रियसार निजनामको ॥ काहूकेअधार विद्याबुद्धिबल कोहै काहूकेअधारहाथी घोड़ाधनधामको॥ मैंतोनिरधारा मेरीइनिहिकरोगेसार मेरेतो

अधार एक केवल हरिनामको ॥ ९ ॥ केते
ध्यानधारणासमाधि विधिहीनमये मिलवैं
परमात्माको आत्मा भिखारीको ॥ केतेनि-
श्वास सनअजपाको जापजपैं केतेभवेश-
कर धतूरकेआहारीको ॥ केतेसकामधर्मनयंत्र
आठौयामजपैं केतेलाभराम केतेगणेशसुख
कारीको ॥ तेरोध्यानज्ञानतेरो आसरो तिहा-
रोमोहिं कोईकछु थापे मैंतो ध्यावों गिरधा-
रीको ॥ १० ॥ जैसे खगबालककी राखिलियो
घंटातरेआभारहवीचराख्यो पांडवनसाथ
की ॥ राखिलियो परीक्षितको माताकेउदर
माहिं राख्योव्रजज्वालव्याल गिरधार्योनिज
हाथको । पारथके रथकोसारथीभयेहौ
तुमसखानिजजानिकैजितायोहै भारतको॥
पावक प्रजारितहां राखिहैमंजारीको देसी
भांतिराखोसाथमोसे अनाथको ॥ ११ ॥ छन्द
सरूणपद ॥ आरतनिके सुहारसुनी तबदीनद-
यालुकी रीतधरीकी ॥ दौरतभतजिकैनिज
धाम सुधासुनी तब ओरपरीकी ॥ मेरियबेर

खिलौनाहै सुकहातकंसौरकरीकुहसीको ॥
धायसबेर सनीजयटेर करीनाहिंबेर सुधरकरी
की ॥ १२ ॥ द्रौपदीकी लाजकाज हारिकाम
दौरिआये चीरकोबढ़ायटेक राखीसभ्यशी-
लकी ॥ पुत्रहेतनारायण नामलेत तत्काल
काटेयमजाल गतिभई अजामीलकी ॥ मु-
ठीएकचावलकी खातहिनिहालकियो कैसी
दशाभईउन ब्राह्मणकुचालकी ॥ मेरहूकरो
चौडोल होतहोकहाचभील तचतानकरौढील
टेरसुनोपालकी ॥ १३ ॥ लीला अगाधब्रज
वासिनकेहितमेली धनाजूकेखेत बिनबोयेउ
पजाईहै । भीष्मकोपण और द्रौपदीकीलाज
राखी अशरणशरणकीरीति वेदमध्यगाईहै ॥
बूड़तबचायोब्रज करपरगिरिधार्यो साह
दननरसीकी हुंडीसकराईहै ॥ कवि ऐनआरअ
बस्तुनिये पुकारमेरी सो ग्रहजराज गजग्राह
कीसीआईहै ॥ १४ ॥ दीनबन्धु दयासिन्धु
सेदेन दुखद्वंदके ऐसी अनेक विविध ग्रंथ-
न में कही है ॥ गोप मैं हलेठनारेराजानंद

है जिनके आरत में पारथ हित एते हारसठी है ॥ नामा कबीर रीधि गणिका अरु कीर तारे चीर लाहि द्रौपदी को जगत यश लई है ॥ बेर मांझ बार भेरो हू लवाइ दैके श्री होलनाथ करुणा निधि देशोहाय यहीगही है ॥ १५ ॥

चन्द्र विलोकन बालवती सुविशाल अटा पै चढ़ी चपलासी । आनन चन्दसमान ज्यों द्युति दामिनिसी चहुँ ओर प्रकाशी । चौंकि उठे तिथि के सबलोग रु गणिकतासों अगौं अजवासी । ज्योतिष आजतई न तुम्है लखो चौथिहै आजु कि पूरणमासी ॥१६॥

सुरंग रंग चूनरी कुसुम्मरंग ले भरी अनंग की छरी बनी ठनी सुथान में । लखै हरौं अनूप की दिवान काम भूप की खड़ी तरंग रूप की अलीगरी वितान में ॥ गई शृंगार साजिके मलीन भृंग लाजिकै दुरै सुभाव जायकै सुकुञ्ज की लतान में । लुठी गुलाल से भरी निहारती खड़ी खड़ी हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान में ॥१७॥

चूमि रहेलती भुखतोतरे बचनवारो गुटमुटचा-
रोदेखि अति हरषावती। उपमालखाऊँ तेज
पाऊँनागनाँकिकहा भणत केदार ब्रह्म रानी
यशगावती। मोदक मिठान खान पान सब
धारोआन खातगजआनन अनंदकंद पाव
तीं। निरखिमहेश प्रेमपुलकितभयो गात
गिरिजा गणेशलियेगोदमें खिलावती १८॥

गौरशरीरमे गौरिविराजत मौरहैऔरही
रीतिकोजाके। नागनकोउपवीतलसै बलदेव
कहैशशिभालमैंताके। दानकरैपलमैंफलचा-
रिऔ टारत अंकलिखे विधनाके। शंकरनाम
निशंकजपैंमैंभरोसेरहौंनिशवासरवाके १९॥

ततक्षण धरत तमक अरचत जनगनगन
सघन कनकदरखतदर। तरलनयनतन घर-
तअधरतन करतलकरल सरल गरल घर।
अटत अजर जस रटत गहन घन सघन
रजत रज रजत अचल घर। दहत सकल
अघ दरसन दरशत दरद न रहत कहत नर
हर हर ॥ २० ॥

जौने ब्रजबासिनके चित्तकाहिं मोहिंलि-योकरिकै अनेकलीला मोहनकढ़ायोहै। जौने नखपरगिरि फूससोउठाय लीन्हो इंद्रको अहंपूतोरिब्रजकोबचायोहै। जौनपांडुजायाके आरत वचनसुनि बसनकोरूपधारि चीरको बढ़ायोहै। तौनेब्रजराज पाहिंविनवै शिवराजबली करियोसहाय अवतेरी शरण आयो है॥ २१॥

जाहीहाथ गिरिउठाय गिरवर गिरधारी भयो जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नाग कालीहै। जाही हाथ तास्यो औ उबास्यो हाथहाथी गहिजाही हाथ सिंधुमथिलक्ष्मी निकारी है। जाहीहाथ धनुष चढ़ायो है सीतापति जाहीहाथ रावण सँहारि लंका जारीहै। हौं तौ मैं अनाथ कर जोरि कहतदीनानाथ वाही हाथ मेरोहाथ गहिवे कि बारी है॥ २२॥

दीननकी बाणी सुनिधाये धनु पाणीतुम आनी नहिं देरयहि सङ्कटलनायकै। सिंध

में प्रकट भये गजहितदीनबन्धुपाल्यो प्रह-
लादहरिकंभ दरशायके। नारी निशिचारी
बशविकल निचारी यह एहो असुरारी दुख
नाशौ किन आयकै। बनमें भुलाने की
बिकाने हाथ दीनबन्धुसागर में सोये कि
साँकरे में जायकै॥ २३

पाय अनुशासन दुशासन करि कोपधा-
यो द्रुपद सुताको चीर गहे भीर भारी है।
भीषम करण द्रोण बैठे व्रतधारी तहां का-
मिनी की ओर केहूँ नेक ना निहारी है।
सुनिके पुकार धाये द्वारिका से यदुराई
बाढ़तदुकूल खैंचि भुजबल हारीहै। सारी
बीचनारी है कि नारी बीच सारी है कि
सारिही कि नारीहै किनारिहीकीसारीहै २४

बांमेंअंग संगसोहैं जनक दुलारीपीत
अम्बरझलक तनअंग द्युतिकारीहै। मोतिन
चमक चहुँओरसोहै भारीकीट कुण्डल क-
पोलनपै शिवराज बलिहारीहै॥ निंदक
कुपंथी खलमंडल विखंडिबेको लखनसमेत

शरचाप करधारीहै। अवधबिहारीयहबिनय हमारी सत्यधर्म रखवारीकी बिहारी अब वारी है ॥ २५ ॥

नीलश्याठिगात सरसीरुहसुहायेनैन अयन सुखमाको करतार रचिदीनाहै । कारेघुंघु-वारे कचसुन्दर सँवारेश्रुति मंजुमकराकृत मनोजमन लीनाहै। नगरनरनारीहैं सकल उमंगअंग मानो घन सुंदरबिलोकिहूबसीना है। ऐरीमतिहीना लेहुलोचन सुखीना सिया सोनेकी अँगूठी रामसाँवरो नगीनाहै॥२६॥

मुनिमखरासिमारिताड़कासुबाहुवीरचरण छुआइजिनशिलातारिदीनाहै। मापतबिहारी आय मिथिलाशहरमाहिं नरअरुनारिनको मनहरिलीनाहै । सोई एसलोने सुकुमार दशरत्थजूके राजतनिहारि कोटिकामछबि छीनाहै। मेरीमहरानी तीनोंलोकमें प्रमाणी सियासोनेकी अँगुठी राम साँवरो नगी-ना है॥ २७ ॥

श्रीवसुंडमालतीनलोचनाबिशालललालअति

विकराल भलोवदन बनाईहै। दारिद अराति
को सोमूलते उपारदेति विश्वसेविजैसे चंड
मुंडको भगाईहै। चिरञ्जीव स्वतधन धान्य
औ कलत्रयुत मोहिंदे सुयशतेरो तीनिलोक
छाईहै। अम्ब कालिकाको अवलंबजयराम-
जूकोराम भक्तिदेबेमैंविलम्बक्यों लगाईहै २८

कौनयुगलागो नहिं काहत कछुयनै बात
सिंह को सियार घुरैं बाजडरैं चिरिया को।
लुच्चनका हाट औ बजारदार शोहदाभये
झूंठे सो दलाल हैं खरीददार चिरियाको।
दिग्गज दतीलनकहँ मेंढुकी दबावैं हाय
शिवकाशिमोहात नहीं राजभयो तिरियाको।
गङ्गाभेधनी औ तिलङ्गा भलेमानुषमेंनंगा
मे थापदार गङ्गा भई किरियाको ॥२९॥

ग्रेहिन दरिद्र ग्रहत्यागिन विभूति दीन्हों
पापिनप्रमोद पुण्यवन्तन छलागयो। ग्रहण
ग्रहीशशानिराजत सु चित्त चित्त सुख। घु
व्यालशेषभारसों दलागयो। फेरिन फिरावत
गुणीन आइ द्वार २ गुणसों विहीनताहि बैठे है

भलाभयो । कहांलौं कहौं एक आनन सौं चूकतेरी नाम चतुराननपै चूकतै चलागयो ॥३०॥

देवतर सागर रतनागरको खारीकरि मृगमथदीन्हो ना सुगंधस्वानमैंभयो । बकुलन को श्वेतकरिकोकिलनबैनदै ब्राह्मभिखारी नीच धामसम्प्रदादयो । काबुलकोदेशजहां मुगुलपछारैंधेनु मेवाकरीताहीं औ करील ब्रजमैंबयो । कौनरचूकतेरीकहौं एकआनन सौं नामचतुरानन पैचूकतैंचलागयो ॥३१॥

अनूप रूप गात है कपूर पान खात है सखीन संगजात है स्वरूप के गुमान में । कहैं प्रवीण कान्ह बांसुरी सजी बजी सुरंग रागसों रँगीभरीपरी सुतान कान में ॥ सम्हारही न देह की रही सुधि न गेह की छकी छबीली नेह की परी सखीन आन में । नैन नीर ढारती न चीरहू सम्हारती हरी हरी पुकारती हरी २ लतान में ॥३२॥

कोकिला करी कुहूकु विरह की उठी हु

हूक दामिनी दमकि रही सावनी घटानमें। अंगके बसन लाल गर मुकता के माल बेंदी अरु तिलक भाल छूटिगे लतान में ॥ सोने सों सरस गात बांसुरी बजी है प्रात लोक लाजहू तजी परी अवाज कान में। हरी हरी कदम्ब की हरी हरी छरी लिये हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान में ॥३३॥

शोरकियो यमपुरमें जाय यमदूत मिलिं-एरे यमराज कछुजानैतें उपाइ हैं। द्विज बलदेव अबआवत हैं आइगये पापी असुरापी नीरगंगाते नहाइहैं। तिनहित देवनकी अंगना बिमानयुत ठाढ़ीढ़ारिचौर निजलोकहि लैजाइ हैं। शंभुहित लाइ हैं बिमल गुण गाइ हैं औ मुक्तिपद पाइ हैं न तेरे धाम आइ हैं ॥३४॥

ध्यानधरैं नितगंगतरंगको सादरसोगुण गायो करैंजू। आठहुयाम भजैं श्रीमाधव सो सुमिरि सुखपायो करैंजू। सादर पूजनके बलदेव अक्षयबटके पहँ जायो करैंजू। तार

यही करतार करौ मन मेरो त्रिवेणी नहायो करेजू ॥३५॥

वेदमतिशोधि २ देखिके पुराण स तिऔ असंतनको भेदबिलगावतो । क कपूत क्रूरकलिके कुचालीलोग कोन राम मिकी चरचा चलावतो । कहैं कविबेनीमन मानुर प्रमाणयह पवितिकठोर कौनहियो उमगाव तो । भारी भवसागरके लोग कैसेहोते पार जोन यहरामायण तुलसी बनावतो ॥३६॥

दूतकहैं यमकेयमसों हम प तकीनेक छुयेनहिंपावते । जादिनसे तुलसी ओफैलि रहीजगमें सबभेद बतावते । नीकी नीअरु भक्तिसनी सियरामको प्रेमहिंए उम वते । नीके पढ़ैंऔ सुनैचितदै ते बिमान चढ़ै सुर लोक सिधावते ॥३७॥

लगीआग तनमेंफिरूँ बागबनमें मिले नाघरनमें करूँमैं कहारी । चहुँओर गोकुल गलीमें निहारी बतायोनकाहू मैं काऊँकहां री ॥ मैंतोहेरि हारी अकेली बिचारी थके

नैनभेरे न पायो मुरारी । अँधेरी निशामें पियारी पुकारे हहारी हहारी बिहारी कहांरी ॥ ३८ ॥

जाप जप्यो नहिं मंत्र थप्यो नहिं वेद पुराण सुनो न बखानो । बीति गयो दिन योंहीं सबै रसमोहन मोहन के न बिकानो । चेरो कहावत तेरो सदा पुनि औरन कोऊ मैं दूसरो जानो । कै लोग रीब कोलिहु निवाजन लो छांड़ो गरीब निवाज को बानो ॥ ३९ ॥

जाहित मातु को नाम यशोदा सो बंशको चन्द्रकला कुलधारी । शोभा समूहमई बन आनँद सुरति रंग अनंग जुवारी । जानि महासहजो रिझवार उदार बिलास मैं रास बिहारी । मेरो मनोरथहू पुरवो तुम हौ जो मनोरथ पूरणकारी ॥ ४० ॥

श्याम तन श्याममन श्याम ही हमारो धन आठो याम ऊधो यहां श्यामहीसों काम है । श्याम हिय श्याम जिय श्याम बिन नाहीं हितिय अन्धेकीसी लाकड़ी अधार एक

श्याम है। श्यामगति श्याममति श्यामही प्रतापपति श्यामसुखदाई सो भुलाये घर श्यामहै। ऊधो तुम भयेबौरे यहां पातीलैआय दौरे योग कहां राखैं हमरोम२ श्यामहैं ॥४१॥

श्यामडम श्यामतम श्यामनिशि श्याम भग श्यामवन श्याम नभश्याम घनश्याम हैं। श्याम नैनी श्याम बेनी गूँधीश्याम माणिकसों दीन्हीं सौरिश्याम कंजी अलै कामश्यामहैं। संसाराम चोलीश्याम भुजन कसी है बामधरे चीरश्याम काम भौर भीर श्याम है। श्याम कुञ्जधाम सरंजाम श्याम कैंचली श्याम श्याम श्याम जहां श्याम श्याम श्यामहैं ॥४२॥

सोवत माहिं जगावतुहौ पिय सोयरहौ सारी रैनिपरी है। नींदकीमारी अहौं अलबेली सोरसकी बात सबै बिसरी है। नेक न लाज पिया तुमको तुमनेकसीबात पै ठाट धरी है। बारहिंबार जगावतुहौ पिय क्या मेरी छाती में थानी धरी है ॥४३॥

कुण्डल चारु बिछुउजनहूँ बिचनी सुख
सेइकै तोरि करी है। रूपको आगरशील
उजागर करताकेग्रह आनिपरीहै। खोलिकै
बन्द दिखाइदे यौवन तेरे नैननमेंमेरी प्रीति
धरी है। मेरी तौ प्रीति लगी तेरे ऊपर क्यों
नहीं छाती में भाती धरी है॥ ४४॥
कंकण करणकल किंकिणी कलित कटि
कंगनकंचुकि कुचकेशकारी यामिनी। कानन
करनफूल कोमल कपोलकंठ कम्बुक कपोत
ग्रीव कोकिला कलापिनी॥ केसरि कुसुम
कलधौतकी कछुनकान्ति कोविद प्रवीण
बेनीकरि वर गामिनी। कोक कारिकासी
किन्नरीकी कन्यकासी कीधौंकामकी क-
लासी कमलासी कोई कामिनी॥ ४५॥
आई ऋतुपावस न आयो पतिप्राणप्यारो
ऐवन गरजु आली गरज सुनावैंना। चातृक
हटकु बकि बकि नहिं फोरैंकान दादुरनदप-
टु भूलेहू न दहू सुनावैंना॥ मैंतो अतिविरह
व्यथामें भई व्याकुल सु जुगुनू चमकिचित्त

छिनगी लगावैंना। आली भौंरहून गावैं मोर
शोरना मचावैं घटाघुमड़ि न आवैं जौलौं
श्याम घर आवैंना ॥ ४६ ॥

छविहै न जैहै प्रीतिजैहै बिनप्रीति रहैहरखु
हिरैहैरी न रहैसुधि वामकी। निशा इहरैहै
बहु झंझा झहरैहै हत्त तन थहरैहै कहां रहैसुधि
धामकी। अमिति हानहैहै जबदामिनी दर-
सैहै कामिनी डरैहै फहरैहै फौज कामकी।
मान मिटिजैहै औ गुमान दहिजैहै जबघन
घहरैहै तब ऐहै सुधिश्यामकी ॥ ४७ ॥

गगन गरजि छायो मेघजोर झरि लायो
त्रिविधि समीर बह बिबिध भयावनी। को-
किला कलोलकरैं मोर बोलैं चहूँ ओर कोपि
कामआयो जुअकेली जानि कामिनी ॥
कन्तोजू शरीरसुख सबकोऊ चाहत है कठिन
कठोरहै पराई पीर पावनी। मारे डारे मदन
मरोरे डारैं दादुर सुदारे मारैं बदरा जराये
मारैं दामिनी ॥ ४८ ॥

पवन झकोरैं धनझोरैं बुन्द [illegible] रैं घने घने

घनघोरैं भारे दौरैं चहु ओरैंरी । बिज्जुछटा
कोरैं बिन खोरैं जी रसाल झोरैं आवत अ-
षाढ़ महीं ठौर ठौर घोरैंरी । घोरैं प्रेमघोरैं
चित्त धीरज बिथोरैं नहीं मानत निहोरैं काम
डाढ़ हूं मि फोरैंरी । तोरैं लाज छोरैं कुलका-
नि बरजोरैं बीर मोरनकी शोरैं मेरे मनहि
मरोरैंरी ॥४९॥

आई ऋतु पावस प्रबल चहुंओर घेरि
फेरिफेरि देति धुरवानहूं की धूकैंरी । दादुर
पपीहा औ झिल्ली गजगान सुनि ध्यान न
रहत ज्ञान मुनिनकी चूकैंरी । प्रीतम बिदेश
चैन पावो ना सँदेश याते परसि समीर
सीरी उठैं हिय हूकैंरी । एरी तन फूकैं देखि
बादर बगूकैं अरु लूकैं सम लागत मयूरन
की कूकैंरी ॥५०॥

ग्रीषम सताई मुरझाई अकुलाई महा
ताप तन छाई छबि मूरति भुलाईरी । पावस
प्रचण्ड यो अखण्ड जलधार मेघ चपला
चमंकि देखि डर उपजाईरी । शरद हेम-

न्तहू बिताई सुख सेज पहि जाकी नाहिं नेक पाय शिशिर निकाईरी । ऐसे सो एकी मति धारिले अनोखी गति ... सुहाई सो बसन्त ऋतु आईरी ॥५१॥

झूमि २ झूमे मानो भूमे परसन आय दशहू दिशान घूमे दामिनी लये लये । धूम धार धूसरित धूम से धुकारे और धुरधान धामे क्षितिछायेसोछयेछये । श्रीपति सुजान कहैं घरी घरी घहरात तपत अतन तन ताप सों तये तये । लाल बिन लाज कैसे चादर रहैगी मोहिं कादर करत आय बादर नये नये ॥५२॥

बरसतमेहनेहसरसत अंगअंग ... सतदेह जैसे जरत जवासोहै । कहै पदमाकर कलिंदिनके कदम्बननैपै मधुपन कीन्होआय महतम वासोहै । ऊधोयह उधम जताय दीजो मोहन सों ब्रजमें सुवासोभयो अगिन अवासोहै । पातकी पपीहा जलपानको न प्यासोकाहू बीधित वियोगिनिके प्राणनको प्यासोहै५३ ॥

पीवकहाँ कहिदेत सो सावस पावस में रसखीन कहा है। जीवननाथके साथ बिना शिव भाषत हैं तनजीव कहां है। कानों सुनी जबते तबते यह जानी न जात सो पीव कहांहै। पीवकहां कहिकै पपिहा केहि सों हुम पूछत पीवकहां है॥५४॥

भावन ते मनके बिछुरे जबते तबतेतन काम सतावन। सावन देह समीर करै बदरा लखि मोर लगे कलगावन। गावन घेरि घटा बरसै जियको सगरे बिधिहै तरसावन। सावन कौन उपाय सखी हियलाय मिलौं अपने मनभावन॥ ५५॥

गरजेघनघोरघटाघुमड़ीजबते बिरहाजुभयोसरजी। मरजीव भयोमृगदादुर चंद लिये रतिनागर की मरजी। मरजी जोउठी पिककी धुनिलै चपला चमकी न रहैबरजी। बरजी बरजी जियको सजनी भयो चातक मोजियको गरजी॥ ५६॥

प्रीतम न आयेजाय द्वारिकामें छाये

ऊधो पाती न पठायी यहां पावसकी हूकहै। मेघघहराने जललागे झहरानेअरु कामशर ताने उरवेधत अचूकहै। झिल्लीकीझलके द्वैजबीजुरीकी चमक तीजे मेघकचमकते उठत तनतूक है। दुखसुखकासे कहौंप्रीतम न आये मौन कोकिलाकी कूकल करेजा टूक टूकहै॥ ९७॥

नयनको तरसैये कहाँलौं कहाँलौं हियो विरहागिनितैये। एको घरीन कहूँ कल पैये कहां लगिप्राणनको तलफैये। आवै यही अबजीमें विचार सखी चलि सौतिहू के घरजैये। मानघटेते कहाघटिहै जुपै प्राणपियारेको देखनपैये॥९८॥

योगकी न कहियो वियोगकी न कहियो कछुरोगकी न कहियो न शोककी सुनाइ-यो। हितकी न कहियो अहितकी न भा-षियोजू चितकीन कहियो नहीं चितकी चेताइयो। पूँछैं जो प्रवीण नेकौ रसिक गोपाललाल गोपिन को हाल को बिहाल

इमिगाइयो। कधौमनभावन सहज सुभावन सों सावन सुहावनको आवन सुनाइयो ५९॥

सूनौंके परम पद ऊनोंके अनन्तमद नूनोंके नदीशनद इन्दिरा झुरैपरी। महिमा मुनीशन की सम्पति दिगीशनकी ईशनकी सिद्धिब्रज वीथीविथुरैपरी। भादोंकी अँधेरी अधराति मथुराके पथपायकै संयोगदेव देवकीदुरैपरी। पारावार पूरण अपार परब्रह्मराशि यशुदा केकोरैं एकबारही कुरैपरी॥ ६०॥

देशविनु भूपति दिनेशविनु पंकज फणेश विनुमणि औ निशेषविनु यामिनी। दीप विनुगेह औ सुगेहविनु सम्पति अदेह विनु देह घनमेहविनु दामिनी। कविता सुछंदविनु मीन जलवृन्द विनु मालती मलिन्दविनु होतिछविछामिनी। दासभगवंतविनु संत अति व्याकुल बसंतविनु कोकिलसो कंत विनुकामिनी॥ ६१॥

आई बिहारि विना हरि हारिसोंप्यारी सखी सुख साज बिसारति। बूझतिहूँ चुपचाइ

लजाइ बिषाद भरी नहिंबैन उचारति । शंकित है मन चिंतति राधिका आन तिया रति चित्त बिचारति । लाजियहो ब्रिजनाथ के साथ यों नैनन आगे प्रत्यक्षनिहारति ॥ ६२ ॥

पियप्यारे तुम्हेंचिरलौं चितधारिधक्यो छबिभारन कातरहैं । तनतापर तापरच्यो अति मैनके प्यासके त्रासतैं आतुर हैं । रसपीबोचहै सुखसों अधरानको आनन तेरो सुधाधर है । बिन मोलही मोल लियो सो लसे तिनसों हँसिबोलि कहा डरहै ६३॥

प्रथम पचीसहू के पैरको न्यारतिहौं छठयें अठारह औ पन्द्रह न्हाय के । चौबिस बत्तीस सत्ताइस सताइनि हैं ताते क्षिति सुतसो उठत अकुलायके । भाषै शिव प्यारी प्यारी को सँदेशो लिखिप्यारे मुख बैन कह्यो पथिक बुझायके । जीवत जो चाहैं कान्ह तुरतमों मिलैं आनि नातो नाक जाती है भुवन ऋतु खाय कै ॥ ६४ ॥

अजब पखेरू एकहाड़ है न चाम जाके आप उड़िजाय पर पंखन देखात है। ताके बार बीनि २ घसन बनावैं लोग ओढ़ितन मेलैं दिब्यरोजही दिखात हैं। जपतपयोग वारे षटरस भोगवारे लालचन्द्र ओढ़ि २ हिये हरषात हैं। सुरमुनि ईशनको पण्डित कवीशनको मत सबको है यहै वाको मांस खात हैं ॥६५॥

दोहरा छंदछप्पै बैतगजलहू सुनावैकोई दादरा सुनावैतऊ देतनापशमहै। पाहुन जो आवैताहि पानिहूँ न देत यह जानतजहान यही कुलकी रसमहै। मोहर रुपैयाकहौ कौड़ीको चलावैकौन बाहर न जानपावै भौन की भसम है। लड़बे को होइ तो हजारनपै हार्यफेरैं वाजे२ लोगनकी देइबे की कसमहै ॥ ६६ ॥

गरज परेते कहाकहतहैं आगकान लाय बिथा सबही सुनिलेतेहैं। माँगनेसे कहत देतेहैंदियाहै फेरिदैंगे औ। कहैंगे और कर

देतेहैं। कासलायदेते दिलासा अकुलाओमत हँसदेतेवनके खराब करदेतेहैं। देनेरकहत सनेनपरैं लोगनते दैनेको नछोड़ैं फेरिपीछे दगादेतेहैं ॥ ६७ ॥

प्यारी की ठोढ़ीको बिंदु दिनेश किधौं बिसराम गोविन्दके जीको। चारुचुम्यो कणिका मणि नील को कैधौं जमाव जम्यो रजनीको। कैधौं अनंग शृँगारको अंग लिख्यो वर मंत्र वशीकर पीको। फूले सरोज में भौंरी बसी किधौं फूल शशी मय रूप्यो अरसीको ॥ ६८ ॥

ये दिनरैनि प्रभामें भरेरहें वै छितिहीन ह्वै प्रातसुहावत। स्वच्छता सोहि रही इनमें उन अङ्क में श्यामलता सरसावत। भेदसबै मुखके औ मयंकके जेते हुते भुवनेश बतावत। ताहू पै भूलिकै एहो चकोर कहामन आननमें टकलावत ॥६९॥

आँखिनमें पुतरीह्वैरहैं हियरामेंहराह्वैसबै रसलूटैं। अंगनसंग बसैंअँग रागह्वै जीव

तेजीवनमूरि न छूटैं । देवजू प्यारेके न्यारे
ऐसबे गुणमोमन माणिक्तें नहिंछूटैं । और
तियानतें औरतियांकरैं मोछतियातें छि
नौजब छूटैं ॥ ७० ॥

मान यथारथ स्वारथको विनती जुदे
देवन जायकरी है । सो सुनिकै हिमवान
हिये निज आनँदकी उघरी सुघरी है ।
बूझतिहौं तुमसों मृगलोचनि रीति नई यह
जानि परी है । जारसनेह सदा शिवने कह
जार शिवा अर्धंग धरी है ॥ ७१ ॥

लैसुख सिंधु सुधा मुख सौतिके आयइतै
रुचि ओठ अमीकी । त्यौंहीं निशंकलई भरि
अंक मयंकमुखी सो सशंकित जीकी ।
जानिगई पहिँचानि सुगंध कछू घिन मानि
भई मुख फीकी । आछे उरोज अँगौछे अँगौ
छनि पोंछति पीक कपोलन पीकी ॥ ७२ ॥

बैठ्यो बनवीथिन बनायदरबारनव पल्ल
व गिलमओ गुलाबनकी गद्दीहै । कीन्हे
कील कोकिल नकीननवासिंदापात झारिदे

सिसल दफतर कुल्यरहीहैं। बिरहपुगाये निज
अमल लिखायो हौं १ चाहुरीसों चापत
चुहहीहैं। कीन्हे सल्तंत निजीसंत औसंतनपै
कामक्षिति कंतको वसंत मुतसदीहैं॥ ७३॥

होतीपत्तझा१ मेरीहोतीरी सँभार सुभिजो
कहूँ रसालहूको मौंरइक पावतो। कोकिला
भँवर बोलसुनतो परायेदेश पार धीवकीपोरिपै
परेनाजिमि धावतो। फूलेफूल देखि कैसे
भूलते ने हमेंआली जोकोऊ बसंतहूकी एक
तानगावतो। आजुकालिह याहीदेश औरे
कछु व्हैहै आली होतीरी बसंत तो हमारो
कंत आवतो॥ ७४॥

केसर सुरंगहूके रंगमें रँगोगी आजु और
गुरु लोगन की लाजको पहेलिबो। गाइबो
बजाइबो जूनाचिबो नचाइबो जू रसनशालैकै हम
सबीबिधि झेलिबो। ठाकुर कहति बालहोनी
लौकरोंगी सबएक अनहोनी कहौ कौनीबिधि
ठेलिबो। कर कुचपेलिबो गरे भुज मेलिबोजो
ऐसी होरी खेलिबो तो हमतौ न खेलिबो ७५

जीवनको नासकर ज्वालाको प्रकाशकर भौरहीते भासकर आसमानछायोहै। घम-का घमक धूप सूखत तलावकूप पौनको न गौन भौन आगीमें तचायोहै। ताकिथकि रहेजाकि सकल बिहाल हाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायोहै। मेरेजान काहूवृषभान जगमोचनको तीसरे त्रिलोचनको लोचन खोलायोहै ॥ ७६ ॥

एअलिए कंतकंतपायन परेहैंआइ हौंनजद हेरीहुमानवज भरेसों। कहैंपदमाकर वै रू-सिगसुएसीभईनैननतेनीं दगई दाहके दवारे सों। रैनादिन चैनहै न मैनहै हमारेवस ऐनमुख सूखत उसास अनुसारेसों। प्राणनकी हानि सी दिखान अबलगीहै हाय कौन गुणजा-निमान कीन्हों प्राणप्यारेसों ॥ ७७ ॥

हारहीके भार उरभार ना सम्हारै नारि अलप अहार रसबासके अहार है। सीरेते सिरात ताते तांती है है जाति डोलै पवनके परस प्यारी पानकीसी डार है। कहै कवि

आलम न रतिहू नरम्भा औनमैन का सुता
ची ऐसी रूपकी अपार है। चानिक विचित्र
और चित्रमैन ऐसी कोऊ चित्रलिखि पूतरी
जियाई करतार है॥७८॥

जेते सचतरुनर तरल बिलोकियत चाटि-
का बिटपलता जेती सुख कारीहै। करतो दई
ओदसा करिके हमारे हेत रचना नवीन करौं
बिनय पुकारीहै। मेटती हिये को ताप
लपाटि २ आय कहै शिव आज सखी शपथ
तिहारीहै। फरतेपुहुपजे निकरते सबहोती तौ
सुफल मनकामना हमारीहै॥ ७९॥

इतिश्रीकाव्यसंग्रह समाप्तः॥